

मांस बिक्री करने का आरोप

केतार। फैतर थाना क्षेत्र के आदिवासी बहुल परती कुशवाही पंचायत के अमावाड़ी हांग में शुक्रवार की रात्रि में एक नील गाय की हत्या कर उसकी मांस का बिक्री करने का मामला प्रकाश में आया है। प्रास जानवारी के अनुसार अमावाड़ी हांग के एक ग्रामीण द्वारा रात्रि में नील गाय की हत्या कर दी गई। और उस नील गाय की मांस को शनिवार की सुबह बिक्री कर दी गई। इसके पास्त ग्रामीणों ने बन विभाग को सूचना दी। ग्रामीणों की सूचना पर वनपाल अम्प्रकाश कुमार एवं विभागीय कुमार ने टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंच कर मामले की जांच किया। इस दौरान ग्रामीणों ने बताया कि गांव के हांग में अखलाश सिंह वेरों द्वारा नील गाय की हत्या कर मांस को ग्रामीणों ने बिक्री कर दी गई है। वनपाल अम्प्रकाश कुमार ने बताया कि अखलाश सिंह वेरों शराब की नशे में घूस था। जिस कारण उसकी गिरफ्तारी नहीं हो पाया। हत्या करने वाले अधिनियम के तहत मामला दर्ज की जायेगी। पश्च की हत्या में शामिल विनिहत लोगों पर भी करवाई की जायेगी। ताकि प्रखण्ड क्षेत्र के जंगलों से जंगली जानवरों की हत्या पर रोक लग सके। इस तौर पर वन रक्षी निशात कुमार, रविन्द्र प्रजापति, रवि कुमार गुसा, संतोष प्रजापति, चमन साह सहित अन्य लोग मौजूद थे।

सड़क दुर्घटना में युवक घायल

चिनाया। थाना क्षेत्र के बिलोती खेर गांव के देंगुरा नदी पुलिया पर शनिवार को हुए सवारी वाहन कमांडर व मोटरसाइकिल की टक्कर के साथ मोटरसाइकिल वाहन युवक घायल हो गया। जिससे राहगीरों की मदद से घायल युवक को उठाकर पास के ही एक निजी विलानिक में भर्ती कराया गया। हांग घायल युवक का इलाज जारी है। प्रास जानवारी के अनुसार डॉड थाना क्षेत्र के पीछे गांव निवासी युवक अपने सुसुल खुर्ची निवासी भूल प्रजापति के घर से गापस अपने घर जा रहा था। इसी खींच बिलोती खेर गांव के देंगुरा नदी पर बने पुलिया के समीप विपरीत दिशा से आ रही कमांडर में मोटरसाइकिल की जारीदार टक्कर हो गई। जिससे मोटरसाइकिल वाहन युवक घायल हो गया है। जबकि इस घटना में कमांडर पर बैठी एक महिला भी घायल बताया जा रहा है। तथा घटना में मोटरसाइकिल वाहन की काफी क्षतिग्रस्त हो चुका है। वहीं आसपास के ग्रामीणों की मदद से घायल युवक को उठाकर पास के ही एक निजी विलानिक में भर्ती कराया गया है। जहां घायल युवक का इलाज जारी है। तो वही खबर लिखे जाने तक मोके पर विनियोगुलिस भी पहुंचकर घटना की छानबान में जुट गई है।

अज्ञात लोगों ने आवास को किया ध्वस्त



श्री बंशीधर नगर। प्रखण्ड क्षेत्र के पिपरडी हांग मामले में जारी राम का प्रधानमंत्री आवास शुक्रवार की रात में अज्ञात लोगों के द्वारा बन रहे आवास को ध्वस्त कर दिया गया। प्रधानमंत्री आवास का लाभक अनिल राम ने बताया कि शुक्रवार को दिन में मामले का धमक कर देर रात हम लोग पुराने मामले में चले गए थे। रात्रि में अज्ञात लोगों के द्वारा बन रहे मामला को ध्वस्त कर दिया गया। उन्होंने बताया कि हम अपने घरों में एंड एंड एंड के बीच अंचलाधिकारी निवासी अवास, पेंशन, राशन जैसी सभी तरह के मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। उन्होंने मुसहर परिवार के जागरूक करते हुए कहा कि आपलोग शराब नहीं पिये, बच्चों को विद्यालय भेजें। मुसहर परिवार के लोगों ने भूमि अतिक्रमण करने की शिकायत की। कैम्प में बीडीओ जियापाल महतो से मुसहर परिवार के छोटे भूमि अपलोगों के द्वारा अतिक्रमण कर दिया गया है। इस लिए कैम्प

विदेशी मुद्रा भंडार 2.91 अरब डॉलर
बढ़कर 564.1 अरब डॉलर पर पहुंचा



मुर्बई। विदेशी मुद्रा परिस्पति, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में बढ़ोतारी होने से देश का विदेशी मुद्रा भंडार 09 दिसंबर को समाप्त सप्ताह में 2.91 अरब डॉलर बढ़कर 564.1 अरब डॉलर पर पहुंच गया जबकि इसके पिछले सप्ताह यह 11.02 अरब डॉलर की बढ़ोतारी लेकर 561.2 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से शुक्रवार का जारी सामाजिक अंकोड के अनुसार 10 दिसंबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के पास सबसे बड़े खटक दिवेशी मुद्रा परिस्पति 3.14 अरब डॉलर की बढ़ोतारी लेकर 500.1 अरब डॉलर हो गयी। वहीं, इस अवधि में स्वर्ण भंडार में 2.96 करोड़ डॉलर की कमी आई और यह घटकर 40.73 अरब डॉलर रह गया। आलोचक सप्ताह विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) में 6.1 करोड़ डॉलर की जीती आई और यह बढ़कर 18.12 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इसी तरह इस अवधि में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि 20 लाख डॉलर की बढ़ोतारी लेकर 5.1 अरब डॉलर हो गई।

अडानी ग्रुप के अडानी पावर ने दिया मल्टीबैगर रिटर्न, 1 साल में 200 फीसदी की उछल



नई दिल्ली। अडानी ग्रुप की कंपनी अडानी पावर के शेयरों ने अपने निवेशकों को तगड़ा रिटर्न दिया है। पिछले एक साल में ये स्टॉक 200 फीसदी से अधिक चढ़ा है। अडानी पावर ने इस साल कई

बड़ी डील पूरी की है और इसका असर कंपनी के शेयरों पर भी नज़र आ रहा है। हालांकि, शुक्रवार को अडानी पावर के शेयरों में गिरावट देखने को मिली। ये स्टॉक 2.80 अंक या 0.89 फीसदी की गिरावट के साथ 312.65 रुपये पर देंट करता हुआ नज़र आया। अडानी पावर के शेयर आज 315 रुपये पर अपने हुए और 317 रुपये इंटार्डे हाई पर पहुंचे। इसके बाद ये गिरकर 310.45 रुपये पर आ गए। ब्लूबर्ग वर्ड इंडेक्स की रिपोर्ट के अनुसार, बेर्ट परफॉर्मेंस के मामले में दुनिया के टॉप-5 शेयरों में अडानी पावर के टॉप-5 शेयरों की तरफ आ रहा है। इसके बाद ये गिरकर 310.45 रुपये पर थे। आज ये स्टॉक 12.30 रुपये पर ट्रेंड कर रहा है। पिछले छह महीने में इस स्टॉक ने 20 फीसदी से अधिक का रिटर्न दिया है।

बुने हुए कपड़ों के निर्यात में वृद्धि की उम्मीद: टीईए



कोयबद्दल। तिरुपुर नियांत्रिक संघ (टीईए) ने शनिवार को उम्मीद जारी कि नवंबर में दर्ज की गई वृद्धि के बाद बुने हुए कपड़ों (निर्विअर) के निर्यात में सकारात्मक वृद्धि देखने को मिलेगा। टीईए के अध्यक्ष के एस चुम्बक्यामन ने एक बयान में कहा कि नवंबर के महीने में तिरुपुर से निर्विअर के निर्यात एक साल पहले ही नवंबर अंदर के मुकाबले 10.6 प्रतिशत बढ़ा है। इसके पहले लातार तीन सप्ताहों तक तिरुपुर से होने वाले निर्यात में लगातार गिरावट दर्ज की गई थी। उन्होंने गांजिय मंत्रालय की तरफ से जारी नियात आकड़ों का जिक्र करते हुए कहा कि रेडीमॉड कपड़ों के नियात में नवंबर में फिर से तो नियात पर भी देखा गया है। नियांत्रिक ने बयान दिया कि नवंबर में उत्तराखण्ड के नियात आकड़ों का जिक्र करते हुए कहा कि नियात में नवंबर में फिर से तो नियात पर भी देखा गया है। और आगे वाले सप्ताह में ऑस्ट्रेलिया के साथ मुक्त व्यापार समझौते के लागू होने और ब्रिटेन के साथ भी ऐसा समझौता होने की संभावना से इसे गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि तिरुपुर से निर्विअर के नियात को भी बढ़ावा दिलेगा।

एक नजारे इधर भी

दिल्ली का चुनावः जीत व प्रदूषण

दि | ल्ली में नगर निगम में भाजपा का शासन होने के बावजूद भाजपा निगम के कामकाज को उपलब्धि के तौर पर भुनाने में नाकामयाब रही। इसके विपरीत मुख्यमंत्री केजरीवाल के पुराने कामकाज के मद्देनजर मतदाताओं ने उनके बादें पर भरोसा जाताया। चुनाव बाद हुए एकिट पोल में जैसी संभावना व्यक्त की जा रही थी, उसके मुताबिक दिल्ली नगर निगम के चुनाव में आम आदमी पार्टी आसानी से बहुमत का आंकड़ा पाने में सफल रही। आप ने 134 बाड़ीं में जीत दर्ज कर बोर्ड पर अपना परचम फहरा दिया। भाजपा की भ्रष्टाचार सहित दूसरे मुद्दों पर आप को घेरे में लेने की कोशिश विफल रही। भाजपा 104 बाड़ीं में चुनाव जीतने के साथ दूसरे स्थान पर रही। कांग्रेस इस चुनाव में भी फिसड़ी साबित हुई। कांग्रेस दहाई का आंकड़ा भी हासिल नहीं कर सकी और 9 बाड़ीं में जीत कर तीसरे स्थान पर सिमट गई। कांग्रेसेशन के चुनाव को लोकसभा चुनाव का लिटमस टेस्ट भी कह सकते हैं। इस चुनाव ने साबित कर दिया है कि अब वो दिन लद गये जब सिर्फ नारों और पुरातन विचारधारा के दम पर मतदाताओं को बरगलाया जा सकता है। एमसीडी के चुनाव ने जन अपेक्षाओं पर खरा नहीं उत्तरने पर भाजपा का 15 साल पुराना मजबूत राजनीतिक किला ढहा दिया। इसका व्यापक संदेश है कि मतदाताओं की परवाह नहीं करने वाले राजनीतिक दलों की ख़ेर नहीं है। मतदाताओं को फिझूल के मुद्दों की चर्चा कर गुमराह नहीं किया जा सकता। महांगाई और बेरोजगारी जैसी राष्ट्रीय समस्याओं को छोड़ दें तो, स्थानीय स्तर पर हर रोज होने वाली समस्याओं के समाधान का ठोस आश्वासन और कार्रवाई के बगैर किसी भी राजनीतिक दल के लिए चुनावी मैदान में टिकना आसान नहीं है। इतना ही नहीं विशेषकर शहरी मतदाताओं और आम नागरिकों को सुविधाओं के साथ गुणवत्ता की भी दरकार है। सिर्फ बुनियादी सुविधाएं मुहैया करा कर ही मतदाताओं का भरोसा नहीं जीता जा सकता है, बल्कि सुविधाओं के साथ गुणवत्ता भी होना जरूरी है। मुख्यमंत्री केजरीवाल न सिर्फ बुनियादी सुविधाओं का विस्तार करने में बल्कि उन्हें गुणवत्तायुक्त बनाने में भी कामयाब रहे हैं। मोहल्ला विलनिक और स्कूलों में अंग्रेजी के माध्यम से स्तरीय शिक्षा इसका उदाहरण हैं। इन चुनावों से यह भी साफ हो गया कि भ्रष्टाचार मतदाताओं के लिए तभी बड़ा मुद्दा बन सकता है, जब बुनियादी सुविधाओं के विस्तार का अभाव हो।

■ योतन्द्र नाथ योगी

जानलवा बारवल

दश म बोरवेल म परन स मासूम बच्चा का मुत्यु क
खबरें आएँ दिन मिलती रहती हैं। हाल ही में मध्य प्रदेश
के बैतूल में बोरवेल में गिरे छह वर्ष के तन्मय को
अथक प्रयासों के बाद भी बचाया नहीं जा सका।
बोरवेल सफल नहीं होने पर उसे तुरंत ही ढक्कन से
बद नहीं कर खुला छोड़ देने की लापरवाही कई
नैनिहातों को असमय ही काल का ग्रास बना लेती
है बच्चे को बचाने में पूरी सरकारी मशीनरी तीन से चार
दिन तक लगी रहती है और उधर बच्चा मौत से संघर्ष
करता रहता है। लेकिन अधिकतर मामलों में बच्चे को
बचाने की कोशिश सफल नहीं हो पाती है। यही बैतूल
में तन्मय के साथ भी हुआ। विभिन्न विभागों के लगभग
चार सौ से अधिक कर्मचारियों के प्रयास भी तन्मय की
जिंदगी नहीं बचा सके इस संबंध में प्रशासन को
कठोरता बरतनी चाहिए। बोरवेल करने वाली कंपनी के
लिए अनिवार्य नियम होना चाहिए कि असफल बोरवेल
को संपूर्ण रूप से बंद करके ही जाए। इस दिशा में
प्रचलित एवं नए कानूनों का निर्माण कर दोषियों के
विरुद्ध कठोर दंड के प्रावधान किये जाने चाहिए,
जिससे इस प्रकार की घटनाओं को रोका जा सके।

■ रामबाबू सोनी

ਬੋਈਰ ਪਰ ਬਾਰ-ਬਾਰ ਤਨਾਵ ਕਿਥੋਂ ਬਢਾ ਰਹਾ ਚੀਜ਼

अ रुणाचल प्रदेश के सीमांत शहर तवांग के याप्त्से इलाके पर कब्जा करने के लिए चीनी सेना ने नौ दिसंबर की सुबह जिन तीन सौ सैनिकों को भेजा, उन्हें खून से लथपथ उलटे पांव लौटने को भारतीय सेना ने मजबूर किया। इस ताजा घुसपैठ ने 15 जून, 2020 की उस खुनी रात की याद ताजा कर दी, जब चीनी सैनिकों ने धोखे से निहत्ये भारतीय सैनिकों पर लाठियों, कंटीली बेतों और भालों से आखेट युग जैसा हमला किया था। तब भारतीय सैनिकों ने बहातुरों से चीनी सैनिकों का मुकाबला किया था। उस वक्त 20 भारतीय सैनिक शहीद हुए, लेकिन विदेशी मीडिया की रिपोर्टों के मुताबिक गलवान में 40 से अधिक चीनी सैनिकों को भी अपनी जान गंवानी पड़ी।

क्या है मकसद : दिलचस्प है कि जिस चीन सरकार ने कुछ दिनों पहले ही भारत पर 1993 और 1996 की संघियों की भावना का उल्लंघन करने का आरोप लगाया था (सिर्फ इसलिए क्योंकि भारत ने उत्तराखण्ड के औलौ में अमेरिकी सेना के साथ युद्धाभ्यास का आयोजन किया था) उसी ने इन संघियों की भावनाओं की धंजियां उड़ाते हुए अरुणाचल प्रदेश से लगी वास्तविक नियंत्रण रेखा का उल्लंघन करने की कोशिश की। ऐसी हरकत अब चीन की फिरतर बन चुकी है, फिर भी इसमें छुपे संदेशों को पढ़ने की कोशिश की जा सकती है। अपने इस कदम के जरिये चीन ने एलाएनी के एक अत्यधिक संवेदनशील इलाके में एक नया मोर्चा खोलने का संकेत दिया है। ऐसा लगता है कि अरुणाचल को अपना हिस्सा बताने वाला चीन इस मसले को भी जीवित रखना चाहता है। इस इलाके के सीमांत क्षेत्रों में उसने पहले से ही गांव बसाने शुरू कर दिये हैं ताकि यह साबित किया जा सके कि यहां चीनी लोग बसते हैं, इसलिए यह इलाका चीन का माना जाए। वास्तव

में शी जिनपिंग जब से चीन के राष्ट्रपति बने हैं, तभी से भारत के साथ विश्वास पैदा करने वाली संधियों को तोड़ने का चिंताजनक सिलसिला शुरू हुआ है। 1993 और 1996 के समझौते चीन के शिखर पुरुष तंग श्याओफिंग के काल में किये गये थे। तब उनके अधीन राष्ट्रपति च्यांग च मिन ने भारत के साथ रिश्ते सुधारने के लिए सीमा पर शांति बनाये रखने के जो अहम समझौते किये, वे दो दशक

1993 और 1996 के समझौते चीन के शिखर

तब उनके अधीन राष्ट्रपति च्यांग च मिन ने दो खबरें ना के बराबर मिलीं। विश्वास बहाली के इन दो खबरों में निटास पैदा हुई। दोनों तरफ के सैनिकों आदान-प्रदान करने लगे थे। सीमा पर शांति थी और एलएसी की चौकसी करते पैदल सैनिकों का जब अपने करते थे। लेकिन जब से शी जिनपिंग ने सत्ता संभाली के सताऴ होने के बाद से चीनी सेना ने कोई पांच तक चलते रहे। इस दौरान सीमा से अप्रिय खबरें ना के बराबर मिलीं। विश्वास बहाली के इन उपायों की ही बदलात सीमा पर तैनात सैनिकों के बीच रिश्तों में मिठास पैदा हुई। दोनों तरफ के सैनिक एक-दूसरे के राष्ट्रीय दिवरों पर मिठाइयों का आदान-प्रदान करने लगे थे। सीमा पर शांति थी और नाच-गाने का माहौल बना रहने लगा था। एलएसी की चौकसी करते पैदल सैनिकों का जब आमना-सामना होता तो वे एक-दूसरे का अधिवादन करते थे। लेकिन जब से शी जिनपिंग ने सत्ता संभाली, एलएसी पर

माहौल बदल गया। शी जिनपिंग के सत्तारूढ़ होने के बाद से चीनी सेना ने कोई पांच बार घुसपैठ की बड़ी वारदात की हैं, जिनमें चुमार, देपसांग, डोकलाम, बुत्से और पूर्वी लद्धाख की गलवान घाटी के अलावा पैंगांग और गोराक्ष हॉटस्प्रिंग का इलाका शामिल है। रह-रह कर घुसपैठ के जरिये चीन भारतीय सेना को हमेशा दबाव में रखने की रणनीति पर चल रहा है। कैसे रुके घुसपैठ : वास्तविक पुष्ट तंग श्याओफिंग के काल में किये गये थे। आरट के साथ रिटर्न सुधारने के लिए सीना पर शाति दशक तक चलते रहे। इस दौरान सीना से अप्रिय उपायों की ही बदौलत सीना पर तैनात सैनिकों के एक-दूसरे के राष्ट्रीय दिवसों पर निटाइयों का दर नाच-गाने का माहौल बना रहने लगा था। गानना-सानना होता तो वे एक-दूसरे का अभिवादन ली, एलएसी का माहौल बदल गया। शी जिनपिंग बार घुसपैठ की बड़ी वारदात की है।

उसकी नहीं बल्कि भारत की जरूरत है। सीमा पर तनाव के जरिये वह भारत पर सैन्य दबाव बनाये रखना चाहत है ताकि विश्व रंगमंच पर तेजी से उभरता भारत चीन के 2047 तक दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक व सैनिक ताकत बनने का सपना न तोड़ दे। चीन को अपनी सैनिक आर्थिक ताकत का घंटंड हो गया है। उसके नेता सोच हैं कि मध्य साप्राज्य की प्राचीन परिकल्पना को पूरा कर का वक्त आ गया है। लेकिन जिस तानाशाही तरीके से चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग देश का शासन चला रहे हैं उससे देश में भारी असंतोष पैदा हो गया है। लोग जहाँ खुलेआम शी जिनपिंग के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं माना जाता है कि इसी वजह से देश का ध्यान जीवन कोविड नीति से हटाने के लिए चीन सरकार ने अरुणाचल प्रदेश में अतिक्रमण की यह ताजा वारदात की है। **बढ़ती वित्तीय बोझः** वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सेना व तैनाती से भारत पर सालाना हजारों करोड़ का वित्तीय बोझ तो बढ़ ही गया था, पूर्वी लद्दाख की पिछले 31 मरीनों ने चल रही सैन्य तैनाती पर रोजाना करीब ढेढ़ सौ करोड़ रुपये का खर्च अनुमानित है। इसे लंबे समय तक वह करने से भारतीय अर्थव्यवस्था में असंतुलन पैदा हो सकत है। सीमा मसले का हल खोजने के लिए चीन को तभी बाध्य किया जा सकता है, जब भारत के साथ पंगा लेने उसके लिए महंगा साबित हो। दीर्घकालिक तौर पर इसके लिए भारत को भी चीन की टक्कर की आर्थिक और सैनिक ताकत बनना होगा। लेकिन फिलहाल जरूरत इसी बात की है कि चीन को शांति व सहयोग के रास्ते पर लाने के लिए कोई ठोस रणनीति अपनाई जाए। ऊपर व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।

—toni g-h

आमासी गुन्ना का वाष्टविक बुलबुला

कि भारत में क्रिप्टो कई रूपों में उभर रहा है, जो लोगों को ताकतवर महसूस कराती है। क्रिप्टो वे समर्थक इस बात की प्रशंसा करते हैं कि मुद्रा का यह रूप अस्थिरता, महंगाई, ब्याज दरों और व्यवस्था से खर्च करने की शक्ति जुटा कर लोगों को वह ताकत देता है, ताकि वे 'ब्लाकचेन' के माध्यम से कथित मुद्रा का 'माइन' यानि उत्थनन कर सकें। हालांकि, यह क्रिप्टो की सच्चाई और वास्तविकता से दूर नहीं हो सकता है। बिटकॉइन में एक

उपयोग 'डाक वेब', 'टीप वेब', आदि पर वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के लिए, धनशोधन, मादक पदार्थ, रिश्वत आदि के लिए उपयोग की जाने वाली मुद्रा के रूप में किया गया है। बढ़ते डिजिटलीकरण के साथ, क्रिप्टो बुलबुले का जन्म हुआ। जिसे ट्रॉलिप मोड़ के रूप में देखा जाता है। 2016 के बाद, नई क्रिप्टो करंसी ने क्रिप्टो प्लेटफार्म और 'नान-फजिबल टोकन' के रूप में अपनी जगह बना ली है। चूंकि भारत में क्रिप्टो कई रूपों में उभरा

बनाया है। इसके साथ ही, क्रिप्टो करंसी की शुरूआत से लेकर अब तक, आम जनता को क्रिप्टो उन्माद से सावधान करने और उनकी रक्षा करने की दिशा में भी विशेष ध्यान दिया गया है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में, हम कई साथी संसदों ने 2017 में उपरोक्त तथ्यों को रेखांकित करते हुए भारत में क्रिप्टो करंसी पर प्रतिबंध लगाने का मुद्दा उठाया था, हालांकि उसी समय केंद्र सरकार (वित्त मंत्रालय, निर्मला सीतारमण के नेतृत्व में) भारतीय रिजर्व बैंक के साथ मिल कर क्रिप्टो करंसी का अध्ययन करने के साथ-साथ केंद्रीय बैंक डिजिटल करंसी (सीबीडीसी) जारी करने के लिए एक समिति का गठन किया। क्रिप्टो करंसी को हम शुरूआत में नहीं पहचान पाए। यह एक ‘पोंजी’ या ठगने वाली योजना से ज्यादा कुछ नहीं है और यह लोगों को सबसे अधिक जोखिम में डालने वाली है, जैसा कि हाल ही में एफटीएक्स की दुर्घटना के मामले में देखा गया, जहां अधिकांश नुकसान उन लोगों को हुआ, जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी की बचत की रकम को क्रिप्टो में एक निवेश के रूप में लगाया था। हालांकि, यह प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा उठाये गये कदमों का ही नतीजा है कि भारतीय निवेशक समुदाय को अभी तक अन्य देशों के छोटे निवेशकों की तुलना में ज्यादा मंदी का सामना नहीं करना पड़ा है। 2018 में आरबीआई ने अपनी सभी नियामक संस्थाओं को क्रिप्टो करंसी में भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया था, लेकिन 2020 में सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस फैसले को पलट दिया गया, जिसके परिणाम स्वरूप कई सारे पौजूदा क्रिप्टो मुद्रा विनियम केंद्र और ज्यादा बढ़ने लगे। आगे के लिए, धोखाधड़ी के खतरे, धनशोधन और निजी जोखिमों आदि पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा, हमें इन साधनों द्वारा पूरी अर्थव्यवस्था और बड़े पैमाने पर अपनी जनता की सुरक्षा के लिए प्रणालीय जोखिमों को स्पष्ट करना होगा। अखिल भारतीय आयुविज्ञान संस्थान (एम्स), दिल्ली के सर्वर पर साइबर हमले में तीन से चार करोड़ रोगियों के व्यक्तिगत डेटा से समझौता करना पड़ा है और हैकरों ने कथित तौर पर क्रिप्टो करंसी में दो सौ करोड़ राशि की मांग की, जो बहुत अहम मामला है।

— नारायणी पुप

ହିନ୍ଦୁ ପାତ୍ର ବାତ !

पाढ़ा का फ़िक्र

३ नासवा सदा के भारतीय समाज सुधारकों का अंधविश्वास विरोधी अभियानों से तत्कालीन हालात को भरसक बदलने की कोशिश की थी। आज के कई सामाजिक कानून उनकी लड़ाइयों की देन हैं। लेकिन जातीय श्रेष्ठता और वर्चस्व अन्य सुधारों पर हावी होते गये। फिर अंधविश्वासों और रूढ़ियों की जकड़बादियां समाज पर नये सिरे से और सख्त होकर कसती गईं। इसलिए आज यह जरूरी लगता है कि ऐसी रूढ़ि परंपरा का प्रतिरोध करने के लिए व्यापक और सतत निर्भयता ढूँढ़ बनी रहे। नरेंद्र दाभोलकर ने 1989 में ‘महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मलन समिति’ के नाम से अंधविश्वास विरोधी जनजागरूकता अभियान शुरू किया था। दाभोलकर की हत्या से उनके कार्यकर्ता स्तब्ध जरूर हुए, लेकिन विचलित होकर बिखरे नहीं। वे आज भी अंधविश्वासों और असहिष्णुता के खिलाफ शहरों, गांवों, कस्बों में लोगों को जागरूक करने की कोशिश करते हैं। हाल के वर्षों में नकली खबरों, अफवाहों और शांति भंग करने वाली धूरतापूर्ण हरकतों के बीच जातीय और धार्मिक विद्वेष ने भी नई परिभाषाएं और नये औजार गढ़ लिए हैं। सैकड़ों उदाहरण लैंगिक असमानता और अंधश्रद्धा के आते रहते हैं। कुछ समय पहले खबर आई थी कि केरल के इडुक्की में कथित दैवी शक्तियां हासिल करने के लिए एक आदमी ने अपने परिवार के पांच सदस्यों को मार डाला। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में एक दंपत्ति ने अपनी छह वर्षीय बीमार बेटी को मार डाला, ताकि उसके बाद स्वस्थ संतान पैदा होंगी। डायन कहकर लड़कियों और औरतों को मार देना या उनकी बीमारी ठीक करने के नाम पर बलाकार करना, दुखद है कि अंधविश्वासों के नाम पर ऐसे अत्याचार थम नहीं रहे हैं। लोक मान्यताएं और पारंपरिक रीति-रिवाज, स्थानीय जनजातियों और आदिवासियों की लोक-संस्कृति का अधिन हिस्सा रहे हैं।

■ शैलेंद्र घैरान

मतदान की दिशा

हिमाचल प्रदेश व गुजरात विधानसभा चुनाव में औसत मतदान फीसद बासठ से पैसठ, जबकि लिल्ली नगर निगम के चुनाव में पचास फीसद प्रतिवेदित हुआ है। इसके पूर्व भी जिन राज्यों में चुनाव हुए, वहाँ का मतदान प्रतिशत बहुत संतोषजनक नहीं माना जा सकता। बुनियादी सवाल यह है कि चुनाव भारतीय लोकतंत्र में एक पर्व की तरह मनाने की धारणा है तो फिर क्या कारण है कि दिन-प्रतिदिन मतदान के फासद में कमी दिख रही है। समाजशास्त्रियों के कई सर्वेक्षण से यह दृष्टिगोचर हुआ है कि वर्तमान में अधिकांश जन प्रतिनिधियों की भूमिका सामाजिक मूल्यों और तानेबानों के अनुसरण आचरण से प्रतिकूल होता गया है। पहले निर्वाचित प्रतिनिधि अपने क्षेत्र की हर गतिविधि और मतदाताओं के दुख-सुख से जुड़े रहा करते थे। चुनाव प्रचार कभी जर्मीनी स्तर पर हुआ करते थे, जिसके कारण अभ्यर्थियों का मतदाताओं से गहन संपर्क की स्थिति भी बनी रहती थी। साथ ही साथ निर्वाचित प्रतिनिधि अपने क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं से जुड़े भी रहा करते थे, जबकि उस समय संचार माध्यम अत्यंत सीमित थे। अब तो धन बल की अपराजेय संसाधन ने चुनाव प्रचार को 'हाई-टेक' बना दिया है, जिससे आम जनता की उदासीनता में वृद्धि हो रही है। आम जन मानस यह मान बैठा है कि वोट के भूखे-प्यासे प्रत्याशी जब विजयश्री प्राप्त कर लेते हैं तो फिर उनका दर्शन दुर्लभ हो जाता है।

— ८२५ —

